कोई खिड़की इसी दीवार से

▪ श्यामसुंदर दुबे

Scanned with OKEN Scanner

कोई खिड़की इसी दीवार से

श्यामसुंदर दुबे

मेधा बुक्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

प्रकाशक
मेधा बुक्स
एक्स-11, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110 032
✆ 22 32 36 72
www.medhabooks.com
medhabooks@rediffmail.com

मूल्य
200.00

© श्यामसुंदर दुबे

प्रथम संस्करण
सन् 2006

आवरण
देव प्रकाश

मुद्रक
अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

KOI KHIRKI ISI DIWAR SE
by
ShyamSunder Dubay

ISBN 81-8166-178-8

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

जल को मुक्त करो 13
सड़क पर दौड़ते ईहामृग 18
रोको! यह वसंत जाने न पाए! 24
किला : एक कविता है! 29
मेरा सच कभी पटरी पर नहीं आ पाता 34
नदी : एक स्मृति है 40
प्रणय का आलोक-वलय 45
उतावली किसे नहीं है! 51
आग लगै तोरी आती-पाती 56
देखा, वामा वह न थी अनल-प्रतिमा वह 62
ध्वनियों की रंगत में डूबी एक सड़क 68
झाड़ू की सींकें, माचिस की तीलियाँ 73
घरों के भीतर अटका एक घर 77
संदेशे आते हैं 82
मरघट पर अतिक्रमण 87
कालः क्रीडति 92
हलदी रंगरँगीली 98
तीर्थ-भाव की खोज 104
आकाश की पंचायत में वर्षा-विचार 110
आत्मा का जल खारा तो नहीं हुआ? 118
पहला दिन मेरे आषाढ़ का 124
धूल पर अंकित चरण चिन्ह 130

Scanned with OKEN Scanner

136 नदी, तुम रूपांबरा हो!
139 ओरछा के सावन-भादों और वर्षा-प्रसंग
144 कोई खिड़की इसी दीवार से खुल जाएगी
150 किले पर कौवा
155 दूर्वा : पृथ्वी का मंगल-विधान
159 पड़ोस में कविता, कविता में पड़ोस
164 समाज की पलकों पर शिक्षक
170 स्मृति में स्मारक
174 प्रकाश-चेतना का शारदीय पर्व

Scanned with OKEN Scanner

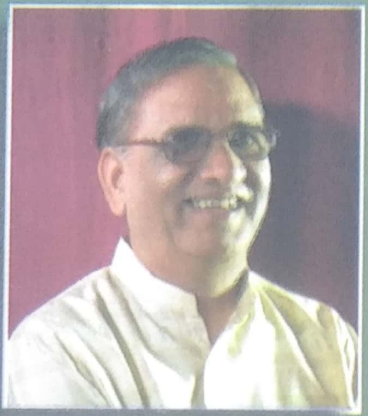

श्यामसुंदर दुबे

■ ललित निबंधकार, कवि, कथाकार, आलोचक एवं लोक-विद् श्यामसुंदर दुबे, 1944 में मध्यप्रदेश (दमोह) के बर्तलाई ग्राम में जनमे। सागर विश्वविद्यालय से एम०ए० हिन्दी साहित्य से। वहीं से पी-एच०डी० की उपाधि। तत्पश्चात् उच्च शिक्षा में प्रोफेसर रहते हुए स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य पद से निवृत्त।

■ बिहारी सतसई का सांस्कृतिक अध्ययन (समीक्षा) 1978, काल मृगया (ललित निबंध संग्रह) 1980, दाख़िल ख़ारिज़ (उपन्यास) 1991, जड़ों की ओर (कहानी-संग्रह) 1992, बुंदेलखंड की लोक कथाएँ (लोक साहित्य) 1992, मरे न माहुर खाय (उपन्यास) 1995, रीते खेत में बिजूका (नवगीत संग्रह) 1997, विषाद बांसुरी की टेर (ललित निबंध संग्रह) 1997, बिहारी सतसई—काव्य और चित्रकला का अंतर्संबंध (समीक्षा) 1998, इतने करीब से देखो (नवगीत संग्रह) 2000, हमारा राजा हँसता क्यों नहीं? (व्यंग्य) 2002, लोक : परंपरा, पहचान एवं प्रवाह (लोक साहित्य) 2003, संस्कृति, समाज और संवेदना (समीक्षा) 2004, समसामयिक निबंध, 2004, ऋतुएँ जो आदमी के भीतर हैं (नवगीत संग्रह) 2005, धरती के अनंत चक्करों में (कविता-संग्रह) 2005, लोक-चित्र कला : परंपरा और रचना-दृष्टि (लोक) 2005

■ श्यामसुंदर दुबे को उनके रचना-कर्म पर अनेक सम्मानों तथा पुरस्कारों से विभूषित किया गया है। दाख़िल-ख़ारिज़ (उपन्यास) को मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रतिष्ठित 'वागीश्वरी' पुरस्कार, विषाद बांसुरी की टेर (ललित निबंध) को बुंदेलखंड साहित्य अकादमी का स्वामी प्रणवानंद सरस्वती हिन्दी पुरस्कार, रीते खेत में बिजूका (नवगीत संग्रह) को मध्यप्रदेश साहित्य ऐकेडमी का बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' पुरस्कार, इसी कृति को डॉ० शंभुनाथ सिंह रिसर्च फाउन्डेशन का नवगीत पुरस्कार, समग्र लेखन के लिए मध्यप्रदेश लेखक संघ का पुष्कर सम्मान, छत्तीसगढ़ का रामचंद्र देशमुख सम्मान एवं 'मधुवन' कला, संस्कृति एवं साहित्य संस्था भोपाल द्वारा 'श्रेष्ठ कला आचार्य' की उपाधि।

■ संपर्क—श्री चंडी जी वार्ड, हटा (दमोह) म०प्र०-470775

■ संपर्क—दूरभाष : 07604-262281, मोबाइल : 9425405939

मेधा बुक्स

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

Scanned with OKEN Scanner